वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के सिद्धांत एवं खुदरा भुगतान प्रणालियों में नवोन्मेष *

जी. पद्मनाभन

प्रतिष्ठित वक्तागण, प्रतिभागीगण, अन्य अतिथि देवियो और सज्जनो। भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से 'वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के सिद्धांत एवं खुदरा भुगतान में नवोन्मेष' के विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में आप सभी लोगों के बीच आकर बात करना खुशी की बात है।

2. सेमिनार के मुख्य विषय का चयन काफी विचार-विमर्श के बाद किया गया और हमारे आसपास के बाजारों को देखते हुए यह एकदम उपयुक्त है। जैसा कि आप जानते हैं, एफएमआई (वित्तीय बाजार आधारभूत संरचना) से तात्पर्य प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण भुगतान प्रणालियों, केंद्रीय प्रतिभूति निक्षेपागारों (सीएसडी), प्रतिभूति निपटान प्रणालियों (एसएसएस), केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी) तथा ट्रेड रिपोजिटरियों से है जो समाशोधन, निपटान तथा मौद्रिक और अन्य वित्तीय लेनदेनों यथा, भुगतानों, प्रतिभूतियों एवं डेरिवेटिव संविदाओं (पण्यों से संबंधित डेरिवेटिव संविदाओं सहित) की सुविधा उपलब्ध कराते हैं।

3. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में वित्तीय बाजार संरचनाओं की भूमिका और महत्त्व, संकट के समय प्रमुखता से सामने आए जिसे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की रिपोर्ट 'सेंट्रल बैंकिंग लेसन्स फ्रॉम द क्राइसिस/संकट से केंद्रीय बैंकिंग को सीख' (27 मई 2010) में सारगर्भित ढंग से शामिल किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि, *'संकट से पहले के दो दशकों के दौरान अगर केंद्रीय बैंक मजबूत भुगतान और निपटान प्रणालियों, जिसमें विदेशी मुद्रा भी शामिल है, को लागू नहीं किया होता तो संकट अधिक गंभीर हो सकता था। वित्तीय संस्था की विफलता का प्रणालीगत असर महत्त्वपूर्ण रूप से आधारभूत संरचना की मजबूती पर निर्भर होता है। ये संरचनाएं जिस बाजार में विद्यमान होती हैं उसे मजबूत आधार प्रदान करती हैं।'*

4. वित्तीय प्रणाली में प्लंबर की भूमिका का निर्वाह करने वाली वित्तीय बाजार आधारभूत संरचना ने संकट के दौरान दो कारणों से बाजार के भरोसे को बनाए रखने में मदद की। पहला कारण था, केंद्रीय प्रतिपक्षकारों जैसी वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं ने प्रतिपक्षकारों के जोखिम को खुद पर लिया और इसके माध्यम से परिवेश में भरोसे को बनाए रखना सुनिश्चित किया, जबकि प्रतिभागी एक दूसरे का भरोसा नहीं कर रहे थे। इस प्रकार से लेनदेन जारी रखने के लिए बाजार में भरोसा उत्पन्न हुआ। दूसरा कारण था, निपटान के लिए लेनदेन अपेक्षित होने पर अपनी जोखिम प्रबंध की कार्यप्रणाली के कारण उनका निपटान करने की उनकी (आधाभूत संरचनाओं की) क्षमता से बाजार की मानःस्थिति को संतुलित बनाए रखने में मदद मिलती है।

5. संकट के दौरान वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं की भूमिका का विश्लेषण करने के लिए बहुत से अध्ययन किए गए हैं। इस प्रकार के अध्ययनों का सामान्य निष्कर्ष यह था कि अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव तथा बाजार में विश्वास के डांवाडोल होने के बावजूद वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाएं भरोसा सुनिश्चित करने और जोखिम को कम करने में सफल रहीं। सीएलएस, आरटीजीएस और केंद्रीय प्रतिपक्षकारों जैसी वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनओं ने अंतरबैंक व्यापार और विदेशी मुद्रा के निपटान, मुद्रा बाजार इत्यादि के माध्यम से प्रणालीगत जोखिम के मूर्त रूप होने में नियंत्रण करने में मदद की। वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाएं कमजोरियों से बाधारहित ढंग से निपटने में सफल रहीं।

6. 1974 की हर्सटैट विफलता, अमरीकी इक्विटी समाशोधन गृह द्वारा 1987 में झेली गई कठिनाइयां, 1987 की हांग कांग फ्यूचर एक्सचेंज इत्यादि जैसे पहले के संकटों से मिले सबक ने विनियामकों को भुगतान, समाशोधन और निपटान प्रणालियों के जोखिमों से निपटने में मदद की। आरटीजीएस प्रणालियों को लागू करने, भुगतान के लिए भुगतान के बदले भुगतान तथा भुगतान के बदले सुपुर्दगी के ढंग को अपनाए जाने, निपटान को अंतिम रूप देने के लिए मजबूत विधिक ढांचा, बाजार के लिए नई आधारभूत संरचना तथा समाशोधन और निपटान के लिए

---

* भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के सिद्धांतों एवं खुदरा भुगतान प्रणालियों में नवोन्मेष के विषय पर 15 फरवरी 2013 को नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री जी. पद्मनाभन द्वारा दिया गया समापन भाषण। श्री सास्वत महापात्र एवं श्रीमती राधा सोमाकुमार से मिले सहयोग के लिए सधन्यवाद आभार व्यक्त किया जाता है।

मजबूत आधारभूत संरचना स्थापित करने जैसे कदमों से इन जोखिमों की पुनरावृत्ति को रोकने में मदद मिली। आरसीसीपी, आरएसएसएस, एसआईपीएस इत्यादि जैसे वैश्विक मानकों की स्थापना से प्रणालीगत दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के प्रभावी अभिशासन, निगरानी और पर्यवेक्षण में मदद मिली।

7. संकट से विनियामकों ने भी कुछ महत्त्वपूर्ण सबक लिए। सबसे खराब परिस्थितियों से निपटने को तैयार रहने से भविष्य की परिस्थितियों से बचाव की गारंटी नहीं मिलती है क्योंकि आने वाला संकट पूर्व अनुभवों से बहुत बड़ा भी हो सकता है। परस्पर संबंधों, स्तरीकरण (टिअरिंग) तथा अप्रत्यक्ष प्रतिभागिता से उत्पन्न होने वाले नए जोखिमों, जिनको वर्तमान मानकों के अंतर्गत अभी तक नियंत्रित नहीं किया गया था, पर नियंत्रण की आवश्यकता है। हाल के वैश्विक संकट से प्रकट हुआ कि सुरक्षित मानी जाने वाली चलनिधि लाइनें तनावपूर्ण परिदृश्य में उतनी सुरक्षित नहीं हैं। विशेषरूप से परस्पर संबंधों और परस्पर निर्भरताओं के कारण वैश्विक रूप से आपस में जुड़े हुए वित्तीय बाजारों के होने के कारण हाल के संकट से एक अन्य महत्त्वपूर्ण सबक यह मिलता है कि विनियामकों के बीच संचार और समन्वय की आवश्यकता है। अंततः, क्षेत्राधिकारों के अंदर तथा उनके बीच में नीतिगत अंतरपणन (पॉलिसी आर्बिट्रेज) को कम करने की आवश्यकता है।

8. इस पैमाने का संकट फिर कभी न आने पाए, ऐसा सुनिश्चित करने के लिए नीति निर्माताओं की प्रतिक्रिया बहुविध और बहु-आयामी रही है। जी-20, वित्तीय स्थिरता बोर्ड तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मानक निर्धारण करने वाली संस्थाओं के तत्वाधान में किए गए विनियामकीय सुधारों का केंद्र बिंदु माइक्रो-प्रूडेंशियल तथा प्रभावपूर्ण मैक्रो-प्रूडेंशियल ढांचों द्वारा समर्थित बाजार के नियमों से संबंधित विनियमों को मजबूत करना रहा है।

9. पूर्व के मानकों को प्रतिस्थापित करने वाले वित्तीय बाजार आधारभूत संरचना से संबंधित भुगतान और निपटान प्रणाली समिति-अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन (सीपीएसएस-आईओएससीओ) के सिद्धांत वित्तीय बाजारों के सुधार के लिए उठाए गए वैश्विक कदमों का हिस्सा हैं। ये सिद्धांत वित्तीय स्थिरता तथा आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करने में वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को और महत्त्व प्रदान करते हैं तथा वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं को मजबूत करने के लिए मानक तय करने एवं उनको लचीला बनाने का काम भी करते हैं ताकि वे भविष्य में संकट का सामना और बेहतर ढंग से कर सकें। पूर्णतः लागू किए जाने पर मानक यह सुनिश्चित करेंगे कि वित्तीय चलनिधि में अव्यवस्था तथा ऋण हानियों के संचरण के प्रमुख माध्यम बनने के स्थान पर वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाएं उनको सौंपे गए कार्य नामतः, आघात सहने का कार्य तथा वित्तीय प्रणाली के प्लंबर (सुधारक) होने का कार्य पूरा कर सकें।

10. इस पृष्ठभूमि के मद्देनजर हमने सोचा कि आधारभूत संरचना के सिद्धांत सम्मेलन के लिए उचित विषय होगा। मुझे यकीन है कि प्रतिष्ठित वक्तागण, जिनका नए मानकों को तैयार करने में अहम योगदान रहा है, ने सिद्धांतों के रहस्यों से पर्दा उठा दिया होगा तथा सिद्धांतों की बारीकियों और जटिलताओं को स्पष्ट कर लिया होगा। आप लोगों ने नोट किया होगा कि नए मानकों में और अधिक अपेक्षाओं को लागू करने की बात कही गई है। नए मानकों ने वित्तीय स्त्रोतों एवं जोखिम प्रबंध ढांचों के रूप में एक नई लक्ष्मण रेखा खींच दी है। विभिन्न क्षेत्राधिकारों/करेंसियों में कार्य करने वाले प्रणालीगत दृष्टि से महत्त्वपूर्ण केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी), जो इस प्रकार के केंद्रीय प्रतिपक्षकारों द्वारा उत्पन्न होने वाले बढ़े हुए जोखिम को स्वीकार करते हुए 'जंप टु डिफाल्ट' जोखिम प्रोफाइल से संबंधित हैं, की चलनिधि तथा ऋण जोखिमों -दोनों के लिए कवर 2 आवश्यकताओं का महत्त्व है। मानकों ने कारोबारी जोखिम से निपटने की आवश्यकता, वसूली और दृढ़ता योजनाओं (रिकवरी एंड रिजॉल्यूशन प्लान) के लिए जरूरत, समुचित तथा स्वतंत्र उपलब्धता, वहनीयता तथा पृथक्करण जैसी अन्य महत्तवपूर्ण आवश्यकताओं को उत्पन्न कर दिया है।

11. नए मानकों की तुलना पुराने मानकों से करने पर विनियामकों तथा वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं -दोनों को अतिरिक्त मार्गदर्शन प्राप्त होता है। जोखिम मॉडलों को मानकों से मूलभूत खंड प्राप्त होते हैं; चाहे इनका संबंध मार्जिन गणना, संपार्श्विक आवश्यकताओं, बैक-टेस्टिंग तथा तनाव परीक्षण की प्रणाली की आवश्यकताओं के बारे में हो या फिर चलनिधि और वित्तीय संसाधन की योजना तैयार करने के बारे में हो। यह आवश्यक रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए कि वित्तीय आधारभूत संरचनाओं के संगठन, कार्यात्मकता और ढांचे में काफी भिन्नता होती है। अतः, सिद्धांतों को कार्यात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए बनाया गया है ताकि

वे वित्तीय आधारभूत संरचनाओं को संबंधित क्षेत्राधिकारों में (उनको) लागू करते समय लचीलापन प्रदान करें।

12. मानकों में अभिप्रेत लाभों को प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। प्रभाविता का मापन एक चुनौती है। आकलन पद्धति से विनियामकों को आकलन में निहित संभावनाओं, तथ्यों को एकत्र करने, निष्कर्ष पर पहुंचने तथा प्रत्येक सिद्धांत के पालन को रेटिंग प्रदान करने के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। आकलन पद्धति से सभी आधारभूत वित्तीय संरचनाओं के सभी क्षेत्राधिकारों में समग्र अनुपालन की निष्पक्षता तथा तुलनीयता को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। मैं उम्मीद करता हूं कि आकलन पद्धति से संबंधित सत्र ने प्रतिभागियों को उनके क्षेत्राधिकारों में सिद्धांतों के प्रभावी आक लन के लिए समर्थ बना दिया होगा।

13. एक अन्य पहलू, जिस पर आप लोगों का ध्यान गया होगा, यह है कि नए मानकों की प्रवर्तनीयता अधिक है क्योंकि वित्तीय क्षेत्र के सुधारों से संबंधित उनकी वचनबद्धता के कारण नए मानक भुगतान और निपटान प्रणाली समिति-अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन (सीपीएसएस-आईओएससीओ) के सदस्यों पर बाध्यकारी हैं। यह बात पिछले मानकों से भिन्न है। इसके अलावा, इन मानकों के अनुपालन से बैंकों को अर्ह केंद्रीय प्रतिपक्षकारों के प्रति उनके निवेश के रूप में आर्थिक बढ़ावा भी मिलता है।

14. बेशक, इन सिद्धांतों को लागू किए जाने से प्राधिकारियों और वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं -दोनों के समक्ष चुनौती प्रकट होगी। मुझे यकीन है कि पैनल परिचर्चा में चुनौतियों को लागू किए जाने के बारे में प्रकाश डाला गया होगा। जिन देशों में बाजारों में कुछ बड़े प्रतिभागियों का प्रभुत्व हो और जिनको निजी स्रोतों से चलनिधि सहायता बहुत कम प्राप्त हो, उनमें सिद्धांत 7 के अंतर्गत चलनिधि आवश्यकताओं को पूरा कर पाना चुनौती पूर्ण होगा। इस परिदृश्य में केंद्रीय बैंक से मिलने वाली चलनिधि सहायता महत्त्वपूर्ण हो जाती है किंतु इसमें भी खुद की चुनौतियां होती हैं। प्रथम, केंद्रीय बैंकों के पास चलनिधि सहायता प्रदान करने का अधिदेश होना चाहिए। द्वितीय, यदि कोई तकनीकी अड़चन नहीं भी हो तब भी नैतिक बाधाओं से निपटने की चुनौती होगी।

15. इसी तरह से, कुछ सिद्धांतों में विधि एवं विनियामकीय ढांचे के अनुरूप परिवर्तन करने की आवश्यकता पड़ेगी। पृथक्करण, वहनीयता, वसूली तथा समाधान आदि के अंतर्गत आवश्यकताओं के अनुपालन में बहुत से क्षेत्राधिकारों को सीमा-बंधनों का सामना करना पड़ेगा। कुछ क्षेत्राधिकारों के लिए ट्रेड रिपोजिटरी नई अवधारणा हो सकती है। ट्रेड रिपोजिटरियों के विनियमन तथा निगरानी के लिए समुचित विधिक ढांचे के बिना, गोपनीयता बनाए रखते हुए ट्रेड रिपोजिटरियों को व्यापार की रिपोर्टिंग अनिवार्य बनाना विनियामक के लिए चुनौतीपूर्ण होगा।

16. ऋण जोखिम, चलनिधि जोखिम या वित्तीय संसाधनों को समाहित करने वाले नए मानकों को पूरा कर पाना वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के लिए भी चुनौतीपूर्ण होगा। वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं को अपने कौशल को बढ़ाने तथा जोखिम मॉडलों को विकसित करने के लिए प्रौद्योगिकी, जनबल; ऐतिहासिक डाटा बेस, परिदृश्यों का विश्लेषण करने आदि के संबंध में पर्याप्त संसाधन जुटाने की आवश्यकता पड़ेगी। विनियामकों को भी वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं द्वारा जोखिम प्रबंध के लिए स्थापित किए गए मूल्यांकन तथा प्रमाणीकरण ढांचे के संबंध में अपने कौशल निर्माण की जरूरत पड़ेगी।

17. संक्षेप में, विचार-विमर्शों, केंद्रीय बैंक तथा बाजार के विनियामकों के समक्ष मानक भुगतान और निपटान प्रणाली समिति-अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन (सीपीएसएस-आईओएससीओ) द्वारा परिकल्पित वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के सिद्धांतों को लागू करने की जिम्मेदारी को पूरा करने की चुनौती होगी। विनियामकों को जिम्मेदारियों, लक्ष्यों तथा इस बात के लिए शर्तें तय करने की जरूरत पड़ेगी कि मानक किन पर लागू होते हैं और विविध प्राधिकार का हस्तक्षेप होने पर उनकी भूमिका को स्पष्ट करना होगा। प्रवर्तन उपायों के सम्मिलित रूप को तैयार करना होगा, जिसमें औपचारिक विधिक उपाय (दिशानिर्देशों, विनियमों, अनुदेशों, मंजूरियों आदि), अनौपचारिक उपाय (नैतिक प्रत्यायन), अन्य प्राधिकारियों के साथ सहयोग, स्वैच्छिक समझौते आदि समाहित हैं। इसके अलावा, इन विनियामकीय तथा निगरानी की नीतियों को पारदर्शी, एकमत तथा प्रभावी होना चाहिए।

18. अब, मैं सेमीनार के दूसरे प्रमुख विषय - खुदरा भुगतान प्रणाली में नवोन्मेष के बारे में चर्चा करूंगा।

खुदरा भुगतान प्रणाली

19. वित्तीय बाजार आधारभूत संरचनाओं के महत्त्व को स्वीकार किए जाने के बावजूद खुदरा भुगतानों का अपना

महत्त्व है। खुदरा भुगतानों के क्षेत्र में हुए नवोन्मेषों का प्रभाव देश विशेष के अनुसार हुआ है जो संबंधित विनियामकीय ढांचे के अंतर्गत आते हैं और ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करते हैं। खुदरा भुगतान के क्षेत्र में होने वाले नवोन्मेषों का प्रभाव सीधे अंतिम उपभोक्ता पर पड़ता है और इससे भुगतान प्रक्रिया का स्वरूप बदल जाता है। समावेशिता के व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत खुदरा भुगतान परिचालनों को अनुमति प्रदान करने तथा कम-नगकी वाले समाज की ओर रूख करने एवं विनियामकीय अनुबंधों के अनुसार इनका अनुपाालन सुनिश्चित करने के लिए विनियामकों को तत्पर रहना पड़ता है। विशिष्ट बात इस तथ्य में है कि अधिकांश देशों में खुदरा भुगतानों के क्षेत्र में हुए नवोन्मेषों की शुरुआत विनियामकों ने की है।

20. खुदरा भुगतानों के नवोन्मषों (बीआईएस, मई 2012) के संबंध में भुगतान और निपटान प्रणाली समिति (सीपीएसएस) के तहत गठित कार्य समूह ने उत्पादों की पांच श्रेणियों को चिह्नित किया है : (i) कार्ड भुगतानों के प्रयोग में नवोन्मेष, (ii) इंटरनेट के माध्यम से भुगतान, (iii) मोबाइल के माध्यम से भुगतान, (iv) बिलों को इलेक्ट्रॉनिक रूप मे प्रस्तुत करना और भुगतान करना तथा (v) आधारभूत संरचना एवं सुरक्षा में सुधार। उत्पादों और प्रक्रियाओं का आपसी संयोग करते हुए नई प्रौद्योगिकी के साथ नवोन्मेषों का घटित होना स्पष्ट रूप से बढ़ता हुआ दिखाई देता है। एनएफसी प्रौद्योगिकी का उद्भव एक ऐसा उदाहरण है जिसमें कार्ड के माध्यम से भुगतान से संबंधित उत्पाद का संयोग मोबाइल प्राद्योगिकी से किया गया है। मोबाइल बिक्री केंद्र (पीओएस) भी एक अन्य उदाहरण है। अतः, मेरी समझ से, प्रौद्योगिकियों का संयोग और एकीकरण समय की आवश्यकता है।

देशी कवरेज से परे की सोचना और विश्वव्यापी खुदरा भुगतानों का एकीकरण

21. जैसा कि आप जानते हैं, खुदरा भुगतानों में नवोन्मेष के संबंध में गठित कार्य समूह ने अपनी रिपोर्ट में जिन प्रवृत्तियों को रेखांकित किया है उनमें से एक यह तथ्य है कि समान उत्पादों एवं श्रेणियों के विश्व भर में उभर कर आने के बावजूद अधिकांश नवोन्मेष देशी बाजार के लिए विकसित किए गए हैं और सिर्फ कुछ ही उत्पादों की पहुंच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। खुदरा भुगतान उत्पाद अथवा प्रक्रिया को देशी सीमाओं से बाहर ले जाने की चुनौती से अंतरराष्ट्रीय मानकों एवं सिद्धांतों की जरूरत उत्पन्न हो जाती है। मास्टर कार्ड एवं वीज़ा कार्ड जैसे कार्ड भुगतान नेटवर्कों की सफलता उक्त का उत्तम उदाहरण है। कार्ड उद्योग से संबंधित भुगतान कार्ड उद्योग के आंकड़ा सुरक्षा मानकों (पीसीआई-डीएसएस)[1] तथा भुगतान एपलीकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर से संबंधित पीए-डीएसएस मानक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत ऐसे कुछ मानक हैं। खुदरा भुगतान बाजार में निहित नेटवर्क प्रभावों के कारण सामान्य मानकों से आवश्यक मात्रा (क्रिटिकल मास) को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है और इससे बाजार में शामिल होने वाले नए प्रतिभागियों के लिए स्थायी आधार तैयार हो सकता है। बड़ी और संभावनायुक्त अर्थव्यवस्थाओं का होना, मूल्यन तथा लागत में कमी होना इसमें निहित लाभ हैं।

खुदरा भुगतान प्रणाली में नवोन्मेष करते समय परस्पर परिचालन के संबंध में विचार करना

22. नवोन्मेष के कारण बहुत से उत्पाद और प्रक्रियाओं की उत्पत्ति हुई है किंतु खुदरा भुगतान के दो सेवा प्रदाताओं में परस्पर परिचालन को अनुमति प्रदान करने की तैयारी करना एक चुनौती है। क्या जोखिम, लागत, मूल्यन, ग्राहक की सुविधा तथा सहूलियत पर विचार किया गया है ? दो प्रतिस्पर्धी सेवाओं को एकीकृत करना तथा उपभोक्ता को लाभ के साथ बेहतरीन उत्पाद प्रदान करने से खुदरा भुगतान प्रणाली उपलब्ध कराने वालों को मांग आधारित पहल करनी होगी। परस्पर परिचालन को संभव बनाने के लिए मानकीकरण एक पूर्व शर्त है। किसी भी भुगतान लिखत को स्वीकृत आधारभूत संरचना की मुख्य धारा के अंतर्गत लाना समय की मांग है। भारत में, 'ई-मनी' के नाम से लोकप्रिय पूर्वदत्त भुगतान लिखत (पीपीआई) को गैर-बैंक संस्थाएं भी जारी करती हैं और उनकी अपनी आधारभूत संरचना में उन्हें स्वीकार किया जाता है। यदि वर्तमान बिक्री केंद्र (पीओएस) की आधारभूत संरचना में इन लिखतों को स्वीकार किया जाना है तो इसमें स्वरूप तथा जुड़ाव के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों को पहले अपनाया जाना होगा। क्या बैंक जगत इसके लिए तैयार है? इसलिए, गैर-बैंकों द्वारा पूर्वदत्त लिखतों को जारी करने वाले कारोबारी मॉडल तथा प्रौद्योगिकी में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी।

[1] पेमेंट कार्ड इंडस्ट्री डाटा सिक्यूरिटी स्टैंडर्ड (पीसीआई डीएसएस) प्रमुख डेबिड, क्रेडिट, पूर्वदत्त (प्रीपेड) कार्ड आदि कार्ड धारकों की सूचना का प्रबंध करने वाले संगठनों से संबंधित ट्रेडमार्क युक्त सूचना सुरक्षा मानक है।

खुदरा भुगतान प्रणाली में नवोन्मेष करते समय वित्तीय समावेशन के बारे में विचार करना

23. हमें ज्ञात है कि या तो सरकारी अधिदेश अथवा अप्रयुक्त बाजार के माध्यम से उत्पन्न हुए नए कारोबारी अवसरों के कारण वित्तीय समावेशन ने बहुत से देशों में नवोन्मेषों के लिए महत्त्वपूर्ण प्रेरक का कार्य किया है। किंतु इस तथ्य के मद्देनजर, कि इस पिरामिड आकार वाली आधारभूत संरचना का आधार लागत के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, कितनी कंपनियां हैं जो निवेश पर प्रतिलाभ की धारणा से परे जाकर नवोन्मेष की बाज़ी लगा रहे हैं? निवेश पर प्रतिलाभ के एकमेव आर्थिक विचार के स्थान पर एकीकृत आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय उपागम को अपनाए जाने से वित्तीय समावेशीयता के इच्छित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

खुदरा भुगतानों में गैर-बैंक संस्थाएं - प्रतिष्ठा की जरूरत

24. नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग, जिसके कारण अभी तक बैंकों के वर्चस्व से परे क्षेत्रों में गैर-बैंक संस्थाएं को प्रतिष्पर्धा की अनुमति मिलती है, के चलते खुदरा भुगतानों में गैर-बैंक संस्थाओं की भूमिका काफी बढ़ गई है। भुगतान और निपटान प्रणाली समिति के तत्वाधन में खुदरा भुगतानों में गैर-बैंक संस्थाओं के संबंध में कार्य समूह भी भुगतान के क्षेत्र में गैर-बैंक संस्थाओं की चुनौतियों तथा लाभों को समझने का प्रयास कर रहा है। भुगतान प्रणाली में गैर-बैंक संस्थाओं की उन्नत भूमिका का संबंध भुगतान प्रणाली के परिदृश्य में परिवर्तन लाने के उनके सामर्थ्य से है क्योंकि वे बाजार के विस्तृत हिस्से की जरूरत के अनुसार अपने उत्पादों में नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रावधान करके उसका लाभ ले सकते हैं।

उत्प्रेरक, निगरानीकर्ता और/या भुगतान प्रणालियों के प्रचालकों के रूप में विनियामक का प्रभाव

25. विनियामक के रूप में आप सहमत होंगे कि विनियामकीय मामलों से समझौता किए बिना उत्प्रेरक का कार्य करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। यह कार्य माता-पिता के कार्य की तरह है जिनको यह पता होना चाहिए कि कब बच्चे के दोस्त बनें और कब माता-पिता बनें। केंद्रीय बैंकों द्वारा नवोन्मेषी खुदरा भुगतानों की निगरानी एवं आकलन के लिए प्रौद्योगिकीय गतिविधियों से निरंतर अद्यतन रहने एवं उचित कुशलताओं का प्रयोग करने और देश के लिए इस तरह की खुदरा भुगतान प्रणाली की आवश्यकता एवं उनके प्रभावों को मापने की प्रणाली के होने की जरूरत है। लेनदेन की मात्रा बढ़ जाने पर दीर्घावधि में नगद एवं मौद्रिक नीति पर नवोन्मेषों के प्रभाव के विश्लेषण की आवश्यकता होगी।

खुदरा भुगतान प्रणालियां - अपने ग्राहक को जानें (केवाईसी) की बाधाएं

26. हम हमेशा यह प्रचार करते हैं कि वित्तीय समावेशन के लिए भुगतान उत्पाद/प्रक्रिया की उपलब्धता और उन तक पहुंच सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है फिर भी इन ग्राहकों को पहचान के प्रमाण उपलब्ध कराने की परीक्षा से गुजरना होता है। बायोमेट्रिक पहचान को ध्यान में रखते हुए खुदरा भुगतान प्रणाली में नवोन्मेष करना समय की मांग है। किंतु इसके लिए देशव्यापी कदम उठाने की आवश्कता पड़ेगी। भारत में, आधार (बायोमेट्रिक) को भुगतान प्रणाली से एकीकृत करने की शुरुआत हो चुकी है और विनियाम ने केवाईसी के मान्य प्रमाण के रूप में आधार को स्वीकार करके इसका समर्थन किया है।

समापक विचार

27. मैं उम्मीद करता हूं कि आप सभी ने दो दिनों में लाभदायी विचार-विमर्श तथा तर्क -वितर्क किया। मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि भारत में आपका ठहरना आनंदपूर्ण रहा। मुझे मालूम है कि कल जब देश की सबसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारत, ताजमहल, को देखने जाएंगे तब यह आनंद और भी बेहतरीन होने वाला है। मैं कामना करता हूं कि भारत में भ्रमण करते हुए आपका समय बढ़िया बीते और आप सभी शैक्षिक और सांस्कृतिक रूप से अधिक समृद्ध होकर अपने-अपने देश लौटें। आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।